BA-III (H)
मैथिली प्रतिष्ठा
पेपर - 7
काव्यशास्त्र
Lec-2

प्रो० संजीत कुमार राम
(अतिथि सहायक प्राध्यापक)
मैथिली विभाग
R.S.J. College, Rajnagar
, Madhubani (L.N.M.U)

काव्यक प्रयोजन :-

संसारक प्रत्येक वस्तु उद्देश्य पूर्ण होइत अछि। तहिना काव्यक प्रयोजनक सोद्देश्य अर्थ फल सँ होइत अछि। कोनो काव्यक प्रभाव-परिणाम की अए संकेत अछि से सहृदय आओर सृजन कर्त्ता स्रष्टा जानि सकैत छथि तेँ इहए प्रयोजन रूप मे जानल जाइत अछि। काव्यक संसार मे प्रजापति कविक रचना निष्प्रयोजन नहि होइत अछि। एहि स्थिति मे कवि कोन प्रकारक उद्देश्य लए काव्यक रचना करैत छथि काव्य रचना दिस प्रवृत्त होइत छथि। एहि समबात कँ काव्यक प्रयोजनादि ध्यान मे राखि संस्कृत-शास्त्री आचार्य लोकनि एवं पाश्चात्य आचार्य लोकनि भिन्न-भिन्न विचार समय समय पर देल गेल। एहि ठाम विचार-विनिमय कँ कते आधारभूत वर्ग मे राखल जा सकैत अछि। एहि सँ पूर्व हमरा लोकनि समय समय पर भारतीय आचार्य लोकनिक द्वारा देल गेल विचार विमर्शक चर्चा करब।

आचार्य भरत मुनि — संस्कृत मे नाट्य शास्त्रक रचनाकार भरत मुनि कँ भारतीय आचार्य क्रम मे प्रथम मानल गेल अछि। हिनक कथन छन्हि जे -

दुःखार्तानां श्रमार्तानां शोकार्तानां तपस्विनाम्।
विश्रान्तिजननं काले नाट्यमेतद् भविष्यति॥

अर्थात् दुःख पीड़ित आर्तपीड़ित आदि कें सान्त्वना प्रीति देबयवला एवं धर्म, यश, आयु, बुद्धि तथा हित कें बढ़ाबयवला प्रयोजन कहलनि अछि। ओना हुनक समय मे काव्य रूपक प्रचलन नहि भेल छल तें हिनक अवधारणा नाटकक प्रयोजन पर केन्द्रित कए लिखल गेल अछि।

भामहक अनुसार - सुप्रसिद्ध अलंकारवादी आचार्य भामह काव्यक प्रयोजनकें छः रूपमे मानलनि अछि। हिनक कथन अछि जे सत्यकाव्यक अनुशीलन मे धर्म, अर्थ, मोक्षक प्राप्ति, यश आओर प्रेम (आनन्द) ई छःगोट प्रयोजनक अतिरिक्त कला मे निपुणता के उपलब्धि मानलनि अछि।

वामन - आचार्य वामन मुख्य रूप सँ काव्यक प्रयोजन मे दू बात पर ध्यान आकृष्ट करैत अछि ओ अछि कीर्ति एवं प्रीति (आनन्द)।

रुद्रट के अनुसार - ई काव्यक अनेक प्रयोजन कहलनि अछि। एहि मे काव्य रसिक लोकनिकें सहज रूपसँ चतुर्वर्गक फल प्राप्तिक अतिरिक्त अव्यापयश विपद्निवारण, रोगमुक्ति एवं अभीष्ट फलक देलनि अछि। एहि तथ्य कें स्पष्ट करैत कहलनि जे अलंकार समक कारण देदीप्यमान आ दोष लगकें नहि होयबाक कारण निर्मल रचनाक निर्माता महाकवि सरसकाव्यक रचना करैत अपन तथा नायकक प्रत्यक्ष युग-युगान्तर धरि रहयवला यशक विस्तार करैत अछि।

Samjit Kumar Ram
08/04/21